



ISSN: 2394-7519  
IJSR 2025; 11(5): 183-185  
© 2025 IJSR  
[www.anantajournal.com](http://www.anantajournal.com)  
Received: 22-08-2025  
Accepted: 27-09-2025

**Manjeet**  
Research Scholar,  
Baba Mastnath University,  
Rohtak, Haryana, India

## स्वामी दयानंद सरस्वती के ज्ञानमीमांसीय विचार और उनकी समकालीन प्रासंगिकता

**Manjeet**

**सारांश**

समकालीन भारतीय दार्शनिकों में एक प्रमुख व्यक्ति, स्वामी दयानंद सामाजिक और शैक्षिक सुधार के साथ-साथ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समर्थक थे। वे ईश्वर की दुनिया में एक महान योद्धा, संस्थाओं और लोगों के निर्माता और प्रकाश के बाहक थे। दयानंद सरस्वती की सबसे बड़ी उपलब्धि आर्य समाज की स्थापना थी, जिसके परिणामस्वरूप धर्म और शिक्षा के क्षेत्रों में क्रांति आई। दयानंद सरस्वती की तीन प्रसिद्ध रचनाएँ, सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्य भूमिका और वेद भाष्य, उनके विश्वदृष्टिकोण के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, उनके द्वारा संपादित पत्रिका "आर्य पत्रिका" उनके विचारों को व्यक्त करती है। प्रसिद्ध आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद समकालीन भारत में शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक विचारों के विकास में एक विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने जाति व्यवस्था, कर्मकांड, भाग्यवाद, शिशुहत्या और दुल्हनों की बिक्री आदि का विरोध किया। उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता के साथ-साथ निम्न वर्गों के सुधार की वकालत की। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य स्वामी दयानंद सरस्वती के ज्ञानमीमांसा संबंधी विचारों और उनकी समकालीन प्रयोजनता पर जोर देना है। वे इस विचार पर जोर देते हैं कि शिक्षा वह है जो लोगों को ज्ञान, संकृति, धार्मिकता, आत्म-विद्यंग्रन और अन्य गुणों को प्राप्त करने के साथ-साथ अज्ञानता और बुरी आदतों से छुटकारा पाने में सक्षम बनाती है। उन्होंने बहुआयामी शिक्षा, उत्कृष्टता और बुद्धिवाद और मानवतावाद के महत्व की वकालत की। स्वामी दयानंद का शैक्षिक दर्शन अपने संदर्भ में प्रकृतिवादी, अपने लक्ष्य में आदर्शवादी और अपने में व्यावहारिक था, जिसकी समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुत प्रासंगिकता है।

**कुटशब्द:** स्वामी दयानंद, आर्यसमाज, शिक्षा

**प्रस्तावना**

भारत ने समय-समय पर महान योद्धाओं, संतों और दार्शनिकों को जन्म दिया है, जिनके नाम इतिहास में दर्ज हैं और जिनकी अंतर्दृष्टि शैक्षिक सिद्धांत और व्यवहार को प्रभावित करती रही है। घेरलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक अभ्यास की भविष्य की दिशा कई शिक्षाविदों और दार्शनिकों से काफी प्रभावित हुई हैं। इन्हीं भी महान दार्शनिक की दार्शनिक मान्यताएँ, साथ ही जिस देश से वे संबंधित हैं, वहाँ की सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियाँ, उनके शैक्षिक आदर्शों पर सीधा प्रभाव डालती हैं। हमारे देश में, ऐसा माना जाता है कि 19वीं सदी में राजनीतिक और सांस्कृतिक पुनर्जन्म हुआ। दयानंद समकालीन भारत में एक प्रसिद्ध व्यक्ति और एक महत्वपूर्ण सामाजिक और धार्मिक सुधारक थे (अरोड़ा, 2013)। उन्होंने आर्यसमाज आंदोलन को बढ़ावा दिया। उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना एक सामाजिक प्रयोग के रूप में की, जिससे भारत के बारे में उनका दृष्टिकोण उभर कर सामने आया। उन्होंने स्थानीय मामलों में मजबूत और सफल सरकारी भागीदारी की वकालत की। इसलिए उनका संदेश काफी सामाजिक-राजनीतिक था (आर्य और यादव, 1988)। दयानंद ने वेदों को अपनी अङ्गिर चट्टान के रूप में स्वीकार किया। वास्तव में, वेद जीवन की व्यावहारिक वास्तविकताओं का एक संग्रह हैं (आर्य, 1987)। वे न केवल भारतीय संस्कृति और विचारों के मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, बल्कि वे उस आधार के रूप में भी कार्य करते हैं, जिस पर योग्यता और सेमिटिक संस्कृतियाँ और उनकी सभी शाखाएँ विकसित हुई हैं। वे मानवता के सबसे अमूल्य अभिलेख थे। अंततः, अपने अथक प्रयासों के माध्यम से, वे लोगों को उनकी अपनी मूल संस्कृति से फिर से जोड़ने में सक्षम हुए (यादव, 2010)। हिंदू धर्म को उसके भ्रष्ट आचरणों से मुक्त करने के लिए, उन्होंने "शुद्धि" आंदोलन की स्थापना की (डेविड, 2007)। उन्होंने जाति व्यवस्था से छुटकारा पाने, विधवा पुनर्विवाह को वैध बनाने और हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा घोषित करने के लिए एक प्रयास का नेतृत्व किया। वे जातिगत भेदभाव के खिलाफ संघर्ष में अग्रणी थे, महिलाओं की उन्नति का समर्थन करते थे और हिंदी को एक सार्वभौमिक अंतर-प्रांतीय भाषा के रूप में इतेमाल करने के लिए प्रेरित करते थे। अपने जीवन के इस तत्व के कारण वे एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय व्यक्ति हैं। इस प्रकार, आर्यसमाज की स्थापना हुई। आर्यसमाज के व्यापक विचार किसी भी सही और महान चीज़ को अपनी विरासत मानते हैं, चाहे वह कहीं भी प्रकट हुई हो। दयानंद का बाहर में दृष्टिकोण वास्तविकता और विज्ञान पर आधारित है। उन्होंने जाति व्यवस्था की कठोरता की आलोचना की और अपने लोगों को सामंती शासन के साथ आने वाले उत्पीड़न और अत्याचार से मुक्त करने का लक्ष्य रखा (सिंह, 1983)। स्वामी दयानंद ने राज्य द्वारा सभी बच्चों को स्कूल जाने के लिए अनिवार्य करने की वकालत की। दयानंद का विचार था कि सभी को ज्ञान का अधिकार है और किसी को भी उसकी जाति या लिंग के कारण इस तक पहुँच से वंचित नहीं किया जाना चाहिए (गुप्ता, 2008)।

**Corresponding Author:**  
**Manjeet**  
Research Scholar,  
Baba Mastnath University,  
Rohtak, Haryana, India

उन्होंने एक समूह, वर्ग या समुदाय को शिक्षा को नियंत्रित करने की शक्ति देने से जुड़े जोखिमों को भी समझा। स्वामी जी ने कई डी.ए.वी. संस्थान बनाए, क्योंकि वे महिलाओं की शिक्षा में बहुत रुचि रखते थे (कपूर, 2011 और झब्बू, 2012)। ये निजी तौर पर संचालित डी.ए.वी. संस्थान, जिनमें कॉलेज और स्कूल शामिल थे, पंजाब में सबसे अच्छे तरीके से चलाए गए थे। शिक्षा के क्षेत्र में और दूसरों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों के एक समूह के रूप में कार्य करने के लिए स्वामी दयानंद का महत्वपूर्ण योगदान सत्यार्थप्रकाश (सरस्वती, 2011) का लेखन था। अध्ययन के उद्देश्य: 1. स्वामी दयानंद सरस्वती के ज्ञान-मीमांसा संबंधी विचारों का अध्ययन करना। 2. आधुनिक समय में स्वामी दयानंद सरस्वती के ज्ञान-मीमांसा संबंधी विचारों की प्रासंगिकता का पता लगाना।

**विधि और प्रक्रिया:** यह शोध गुणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित था, इसलिए इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने उद्देश्यों का अध्ययन करने के लिए दार्शनिक और विषय-वस्तु विश्लेषण विधियों का उपयोग किया। इस अध्ययन में मुख्य रूप से दार्शनिक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है क्योंकि यह एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण है जो स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की जांच, विश्लेषण और संश्लेषण करता है। दार्शनिक दृष्टिकोण इस पर जोर देता है 1. शैक्षिक विचारों की तर्कसंगत जांच। 2. शैक्षिक अनुसंधान की पद्धति की उपयुक्तता। 3. एक प्रणाली में एकीकरण की अवधारणा।

**शिक्षा का अर्थ:** स्वामी दयानंद सरस्वती के अनुसार, शिक्षा पदार्थ, व्यक्तिगत विकास और सभी जीवित प्राणियों की भलाई का वास्तविक और वास्तविक ज्ञान प्रदान करती है। मोटे तौर पर, इसे दूसरों के प्रति दान और सहायता की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। इसलिए, शिक्षा सभी मानव अधिकारों, भौतिक और दैवीय दोनों के बारे में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया है, गुणों के क्रमिक और निरंतर विकास के माध्यम से, अपने जीवन के साथ-साथ दूसरों के जीवन में खुशी और आनंद लाना (मंगत, और कौर, 2016)। स्वामी दयानंद के अनुसार, शिक्षा के बिना एक व्यक्ति केवल नाम का आदमी है। स्वामी जी को यह अहसास हुआ कि शिक्षा समाज को बदलने और नया रूप देने के लिए एक बहुत शक्तिशाली उपकरण है।

**शिक्षा के उद्देश्य:** स्वामी जी के अनुसार, "जीवन में सर्वोच्च आकांक्षाएँ शिक्षा, उत्तम चरित्र, उत्तम आचरण और ज्ञान प्राप्त करना थीं। माता-पिता, शिक्षकों और परिवार के सदस्यों की अंतिम जिम्मेदारी बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करना है।" स्वामी दयानंद के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को धनी कैरियर या सार्वजनिक पद के लिए तैयार करना नहीं बल्कि सीखने के प्रति प्रेम होना चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षा आदर्श व्यक्तित्व और पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

**चरित्र विकास:** "सत्यार्थप्रकाश" में स्वामी जी का दावा है कि यदि किसी व्यक्ति में नैतिक विश्वास और नैतिक चरित्र का अभाव है तो उसकी बौद्धिक उपलब्धियाँ बेकार हैं। वैदिक और ब्राह्मण काल में शिक्षा का मुख्य लक्ष्य नैतिक चरित्र का विकास करना था। स्वामी जी के अनुसार शिक्षकों को नैतिक व्यक्ति होना चाहिए, ताकि विद्यार्थी उनका सम्मान करें। मानवता का प्राथमिक लक्ष्य चरित्र विकास होना चाहिए।

**शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य:** शिक्षा का मतलब बस एक छात्र को उसके समुदाय की संस्कृति से परिचित कराना और उसे सांस्कृतिक उद्देश्य के अनुसार उसके मूल्यों और मानकों पर खरा उतरने के लिए उपकरण देना है। संस्कृति के बिना मनुष्य पशु से बेहतर नहीं है। स्वामी दयानंद ने भारत की जनता को भारतीय संस्कृति के वैदिक युग से अवगत कराया। उन्होंने हिंदू विचार और दृष्टिकोण के परिवर्तन में सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**जीवन की तैयारी:** दयानंद के अनुसार, केवल वे ही लोग एक महान और संरचित समुदाय की सदस्यता के लिए उपयुक्त थे, जिन्होंने अपने स्कूली वर्षों के दौरान व्यवस्थित जीवन और अनुशासन का मूल्य सीखा था। धर्मनिरपेक्ष शिक्षा का उद्देश्य

व्यक्ति के समग्र विकास को बढ़ावा देना है। पाठ्यक्रम: स्वामी दयानंद ने केवल एक शानदार आदर्शवादी थे, बल्कि एक सामाजिक और धार्मिक सुधारक भी थे, जो प्राचीन वैदिक सभ्यता के लिए खड़े थे। उनका ईमानदार लक्ष्य अपने लोगों को अतीत से उनकी समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को समझने में मदद करना था। ऐसा करने के लिए, उन्होंने एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाने का लक्ष्य रखा, जो भारतीय युवा कॉलेजों और स्कूलों को आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विरासत के केंद्रों में बदल दो। दयानंद एक व्यापक दायरे वाले पाठ्यक्रम की सलाह देते हैं।

सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन 3 में, उन्होंने अध्ययन के निम्नलिखित पाठ्यक्रम की सिफारिश की:

- पाणिनि के ध्वन्यात्मकता को सभी छात्रों को पढ़ाया जाना चाहिए। पहला है पाणिनि का ध्वन्यात्मकता; माता-पिता, शिक्षकों और बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि विभिन्न अक्षरों का उच्चारण उचित समय पर, उचित मात्रा में प्रयास के साथ और उचित माध्यम से कैसे किया जाए। तीन साल की अवधि के दौरान, बच्चों को पाणिनि और पतंजलि द्वारा पाँच व्याकरण संकलन पढ़ाए जाने चाहिए।
- दयानंद ने जोर देकर कहा कि सबसे महत्वपूर्ण विषय वस्तु को ब्राह्मणों के लिए उचित ध्यान और अर्थ के साथ संबोधित किया जाना चाहिए। उन्होंने उदाहरण और उपदेश के द्वारा सभी उच्च शिक्षा के लिए शिक्षा की प्राथमिक भाषा के रूप में संस्कृत का समर्थन किया और शिक्षण सहायक के रूप में विदेशी भाषा अंग्रेजी के उपयोग का विरोध किया। शिक्षक की भूमिका: छात्र के बौद्धिक और आध्यात्मिक समुदाय को हमेशा शिक्षक के रूप में मान्यता दी गई है। उनके समर्थन और मार्गदर्शन के बिना कोई भी स्कूली शिक्षा संभव नहीं है। सत्यार्थप्रकाश के अध्याय 2 में स्वामी दयानंद कहते हैं कि "केवल वही व्यक्ति एक प्रतिभाशाली विद्वान बन सकता है जिसे तीन अद्भुत शिक्षकों - पिता, माता और शिक्षक - का अवसर मिलता है।" छात्र नया ध्रुव है, जबकि शिक्षक पुराना ध्रुव है। छात्र का शिक्षक के परिवार में स्वागत किया जाना चाहिए। शिक्षक और छात्र दोनों को सम्मानजनक, संयुक्त और नैतिक जीवन जीना चाहिए।

### निष्कर्ष

कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि स्वामी दयानंद का शैक्षिक दर्शन हर तरह से वर्तमान है, क्योंकि उन्होंने जो भी वकालत की वह मानवता की भलाई और देश की उन्नति के लिए थी। मशीन, गतिशीलता और ऊर्जा तीन प्राथमिक तत्व हैं जो 21वीं सदी की सभ्यता को हमारी दुनिया में आगे बढ़ा रहे हैं जो तेजी से बदल रही है। हमारी वर्तमान सरकार तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा पर स्वामी दयानंद सरस्वती के सिद्धांतों को क्रमादेशित शिक्षा और कम्प्यूटरीकृत निर्देशों को लागू करके ठोस रूप दे रही है, जिसे स्कूल की प्रथाओं में शामिल किया जाना चाहिए। एक शब्द में, दयानंद का शैक्षिक दर्शन वर्तमान में शिक्षा के आयोजन के तरीके पर पूरी तरह से लागू होता है। महान दार्शनिक स्वामी जी के लिए धन्यवाद, शैक्षिक सिद्धांत की उनकी दार्शनिक अवधारणाओं को अपनाकर, हमारे समकालीन शैक्षणिक संस्थान अपनी आकांक्षाओं को वास्तविकता में बदलने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं।

### संदर्भ

- अरोड़ा, सी. पी. (2013). महर्षि दयानंद सरस्वती का जीवन। Slideshare.net पर उपलब्ध है।
- आर्य, के.एस. और यादव, के.सी. (1988). आर्य समाज और उसका स्वतंत्रता आंदोलन। नई दिल्ली: मनोहर प्रकाशन।
- आर्य, के.एस. (1987). स्वामी दयानंद सरस्वती, उनके जीवन और कार्यों का एक अध्ययन। दिल्ली: मनोहर प्रकाशन।
- डेविड, एच. (2007). आर्य समाज गुजरात 1895-1930 का शुद्धिकरण। भारतीय आर्थिक सामाजिक इतिहास समीक्षा, 44 (1), 41-65।
- गुप्ता, एन.एल. (2008)। स्वामी दयानंद सरस्वती एक शैक्षिक दार्शनिक। अनमोल प्रकाशन प्रा. लि।

6. झब्बू, आर. (12). दयानंद सरस्वती के जीवन और कार्यों पर निबंध।
7. कपूर, एस. (2011). आर्यसमाज और डीएवी मोर्मेंट: शैक्षिक और सामाजिक आयाम। [Preservearticles.com](http://Preservearticles.com) पर उपलब्ध है।
8. किश्वर, एम. (1986). आर्यसमाज और महिला शिक्षा: कन्या महाविद्यालय, जालंधरा इकनोमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 2 (1), 17-18.
9. मंगत, एम. के. और कौर, ए. (2016). स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता और आधुनिक समय में उनकी प्रासंगिकता। सुचारिता: दर्शन और धर्म का एक जर्नल, 4 (2), 1-24.
10. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति। नई दिल्ली: एमएचआरडी।
11. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2005)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चया की रूपरेखा 2005। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
12. सरस्वती, डी. एन. (2011) दिल्ली : आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट।
13. सिंह, बी.के. (1983)। स्वामी दयानंद। नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया।
14. यादव, के.सी. (2010)। दयानंद सरस्वती की आत्मकथा। नई दिल्ली : साउथ एशिया बुक्स।